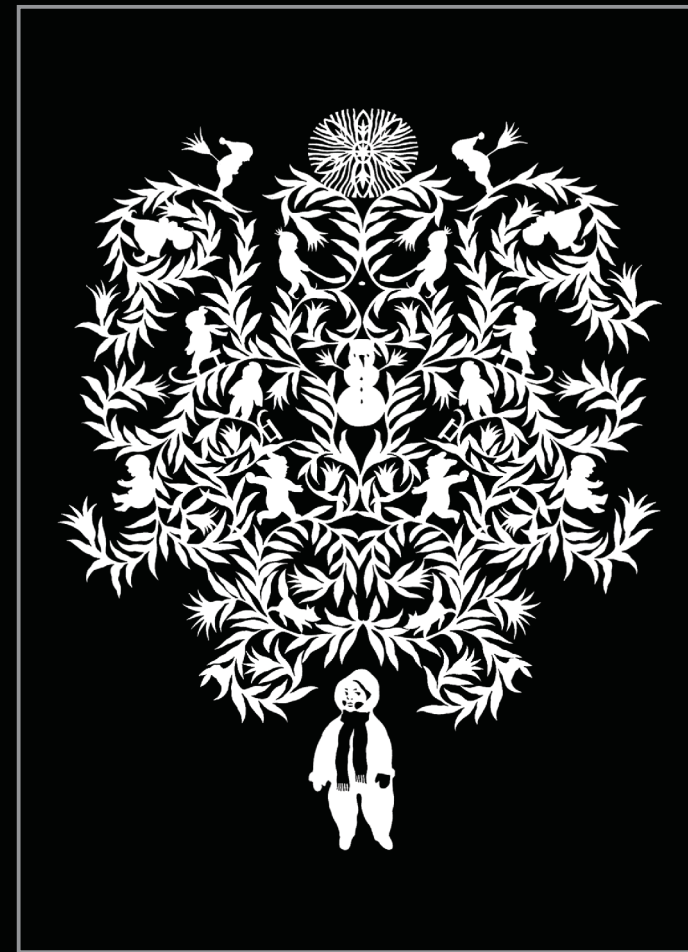


СТУДЗЕНЬ



CLOTHES

I remember as my grandmother started preparing clothes for her funeral. "Here are my burial clothes" she said, and carefully, with a barely noticeable smile, folded a brown dress, smoothed out its wrinkles, put it into a special wrapping and hid it away in a shelf especially chosen for these garments the shelf of death. For the full complement, my grandmother lacked only a fastening sash. My grandmother showed this treasure to all of her daughters. In case they forgot about this important disclosure, my grandmother also notified the neighborhood ladies - unlike her daughters, they would not forget, it's a different generation. When talking about her 'burial gown' my grandmother was very calm. It bothered the younger relatives; to them it was awful to talk about one's burial clothing. But for me, the ritual seemed to be rather playful and funny. I even imagined in which clothes I might be buried. By contrast to my grandmother, I had not prepared anything for myself. I thought my grandmother much more responsible and aware. After that, my grandmother still lived for many years. She died abroad, far from her home. In order to be taken back and buried in her cemetery plot, as she wished for her final resting place, her body needed to be cremated. Neither her daughters nor the neighborhood ladies knew what to do with my grandmother's clothes. I proposed that the urn with her ashes be put into a coffin and below it set her burial dress, shoes, and the fastening sash. On the day of the funeral, there was a very intense sun. It was a summer day and a calm day. Calm as my grandmother's face when she quietly and peacefully put her clothes in order and set them out on the shelf for her final journey.

1998/2009

| | СТУДЗЕНЬ | | | | ЛЮТЫ | | | | САКАВІК | | | | КРАСАВІК | | | | | | |
|----------|----------|----|----|----|------------|----|----|----|----------|----|----|----|----------|----|----|----|----|----|----|
| МЕСІЧ | 5 | 12 | 19 | 26 | 2 | 9 | 16 | 23 | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | 6 | 13 | 20 | 27 | | |
| ЯРЭЦ | 6 | 13 | 20 | 27 | 3 | 10 | 17 | 24 | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | 7 | 14 | 21 | 28 | | |
| РАДАЎНІК | 7 | 14 | 21 | 28 | 4 | 11 | 18 | 25 | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | |
| ПЯРУНЕЦ | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | 5 | 12 | 19 | 26 | 5 | 12 | 19 | 26 | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | |
| ГРАМНІЦА | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | 6 | 13 | 20 | 27 | 6 | 13 | 20 | 27 | 3 | 10 | 17 | 24 | | |
| ЛАДЗІЧ | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | 7 | 14 | 21 | 28 | 7 | 14 | 21 | 28 | 4 | 11 | 18 | 25 | | |
| СОЎНІК | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 1 | 8 | 15 | 22 | 5 | 12 | 19 | 26 | | |
| | ТРАВЕНЬ | | | | ЧЭРВЕНЬ | | | | ЛІПЕНЬ | | | | ЖНІВЕНЬ | | | | | | |
| МЕСІЧ | 4 | 11 | 18 | 25 | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | 6 | 13 | 20 | 27 | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | |
| ЯРЭЦ | 5 | 12 | 19 | 26 | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | 7 | 14 | 21 | 28 | 4 | 11 | 18 | 25 | | |
| РАДАЎНІК | 6 | 13 | 20 | 27 | 3 | 10 | 17 | 24 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 5 | 12 | 19 | 26 | | |
| ПЯРУНЕЦ | 7 | 14 | 21 | 28 | 4 | 11 | 18 | 25 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 6 | 13 | 20 | 27 | | |
| ГРАМНІЦА | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | 5 | 12 | 19 | 26 | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | 7 | 14 | 21 | 28 | |
| ЛАДЗІЧ | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | 6 | 13 | 20 | 27 | 4 | 11 | 18 | 25 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| СОЎНІК | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | 7 | 14 | 21 | 28 | 5 | 12 | 19 | 26 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| | ВЕРАСЕНЬ | | | | КАСТРЫЧНІК | | | | ЛІСТАПАД | | | | СЬНЕЖАНЬ | | | | | | |
| МЕСІЧ | 7 | 14 | 21 | 28 | 5 | 12 | 19 | 26 | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | 7 | 14 | 21 | 28 | | |
| ЯРЭЦ | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | 6 | 13 | 20 | 27 | 3 | 10 | 17 | 24 | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | |
| РАДАЎНІК | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | 7 | 14 | 21 | 28 | 4 | 11 | 18 | 25 | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | |
| ПЯРУНЕЦ | 3 | 10 | 17 | 24 | | 1 | 8 | 15 | 22 | 5 | 12 | 19 | 26 | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 | |
| ГРАМНІЦА | 4 | 11 | 18 | 25 | | 2 | 9 | 16 | 23 | 6 | 13 | 20 | 27 | 4 | 11 | 18 | 25 | | |
| ЛАДЗІЧ | 5 | 12 | 19 | 26 | | 3 | 10 | 17 | 24 | 7 | 14 | 21 | 28 | 5 | 12 | 19 | 26 | | |
| СОЎНІК | 6 | 13 | 20 | 27 | | 4 | 11 | 18 | 25 | 1 | 8 | 15 | 22 | 6 | 13 | 20 | 27 | | |

АДЗЕНЬНЕ

Памятаю, як бабуля пачала рыхтаваць адзеньне на сваё пахаваньне. "Зось мая адзёжка на сьмерць", - казала яна і старанна, з ледзь прыкметнай усмешкай, складала карычневую сукенку, разгладжвала паўсталыя на ёй складачкі, заварочвала ў спэцыяльны мяшэчак і хавала назад, на вызначаную дзеля гэтага ў шафе спэцыяльную паліцу - паліцу сьмерці. Да поўнага камплекту бабулі бракавала толькі матузка для падперазаньня сукенкі. Бабуля паказвала свой скарб усім дачкам, а на выпадак, калі дочкі забудуцца на гэтую важную справу, бабуля папярэдзіла таксама суседак; суседкі, у адпозьненьне ад дачок, не забудуцца - ня тое пакаленьне. Гаворачы пра "адзёжку на сьмерць", бабуля была вельмі пагодная. Гэта бянтэжыла маладзейшых сваякоў: як жа гэта жакліва - гаварыць пра адзеньне на сваё пахаваньне. А мне ж ўвесь рытуал здаваўся чымсьці нават забавным і вясёлым. Я сам нават задумаўся, у чым гэта пахаваюць уласна мяне. Я ж, у адпозьненьне ад бабулі, нічога яшчэ не падрыхтаваў. Мне здалася, што бабуля нашмат больш за мяне адказная і прадбачлівая. З таго часу бабуля пражыла яшчэ многа гадоў. Памёрла яна за мяжой, далёка ад роднае хаты, і каб пахаваць бабулю на родных могілках, дзе яна заўсёды прагла спачыць, цела трэба было спаяліць... Што рабіць з бабуліным уборам, ня ведалі ні дочки, ні суседкі. Я сказаў, каб урну з попелам паставілі ў труну, а ніжэй пад ёй паклалі сукенку, чаравікі і матузок для падперазаньня. У дзень пахаваньня сьвяціла вельмі яркае сонца. Дзень быў летні і надзвычай пагодлівы. Пагодлівы, як аблічча маёй бабулі, калі тая ціха і спакойна адкладала на паліцу адзеньне ў сваю апошнюю дарогу.